त्रि – दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी : एक रपट

(24- 26 सितम्बर 2015)

विषय : दर्शन और साहित्य : हजारी प्रसाद दिवेदी का विशेष संदर्भ

INDIAN COUNSIL OF PHILOSOPHICAL RESARCH ,New Delhi

प्रयोजक :- भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की आर्थिक सहायता से दर्शन विभाग एवं हिन्दी भवन, विश्वभारती विश्वविद्यालय में विगत 24 -26 सितम्बर 2015 को त्रि – दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ | संगोष्ठी का विषय था : "दर्शन और साहित्य : हजारी प्रसाद दिवेदी का विशेष संदर्भ" जिसमें देश के कोने – कोने से दर्शन और साहित्य के मूर्धन्य विदानों ने अपने अमूल्य विचार रखे और खूब जम कर बहस भी किया | साथ ही कई महाविद्यालय, विश्वविधालयों से आगत शोधार्थियों ने अपने गंभीर शोध पत्रों द्वारा संगोष्ठी को एक सार्थक संगोष्ठी का स्वरुप देने की कोशिश की |

किसी भी संगोष्ठी की जान होती है उसमें आम जन की सहभागिता और विषय के साथ, वक्ताओं के साथ संवाद जो इस संगोष्ठी में देखी गयी | एक तरफ विद्यार्थियों का बढ़- चढ़ कर इसमें पूरी लगन और निष्ठा के साथ संगोष्ठी की पूरी मंचीय व्यवस्था से लेकर भोजन व्यवस्था, साज-सज्जा की व्यवस्था तक में जुड़ा होना तो वहीं कुछ गंभीर प्रश्नों से विद्वान वक्ताओं तक अपनी जिज्ञासाओं के समाधान के लिए तत्पर होना इस संगोष्ठी की सबसे बड़ी उपलब्धि रही |

उद्घाटन सत्र और समापन सत्र के अलावा कुल छः वैचारिक सत्रों एवं दो सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा कवि सम्मेलन के साथ समाप्त होने वाली यह राष्ट्रीय संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण रही | इस संगोष्ठी में एक ओर जहाँ दर्शन और साहित्य की नई - पुरानी भूमिकाओं को आज के संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया वहीं दूसरी ओर भाषा और जीवन को उसकी पूरी पहचान के साथ, सामाजार्थिक परिपेक्ष्य में भी देखने सनझने का प्रयत्न किया गया |

संगोष्ठी का प्रारम्भ विश्वभारती की परम्परानुसार अतिथियों के आसन ग्रहण, चन्दन तिलक और उनके स्वागत के साथ मंगलाचरण गान के साथ हुआ | स्वागत भाषण हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. शाकुन्तला मिश्र ने करते हुए हजारी प्रसाद दिवेदी और हिन्दी विभाग के संबंधों की विस्तृत चर्चा की | तत्पश्चात भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव प्रो. माननेन्द्र प्रताप सिंह जी ने ऐसी संगोष्ठी के महत्व की चर्चा करते हुए इस संगोष्ठी के संयोजकों (सचिव प्रो. हरिश्चन्द्र मिश्र, सह- संयोजक डां. रेखा ओझा) को आयोजन की शुभकामनाएँ दी एवं यह भरोसा दिलाया कि ऐसे किसी भी आयोजन को उनका पूरा समर्थन भविष्य में भी मिलता रहेगा | प्रो. सिंह ने विषय- परिवर्तन का दायित्व भी बखूबी निभाया

, जिसे IIT Kanpur के retd. प्रसिद विदवान और दार्शनिक ,चिन्तक प्रो.राजेन्द्र प्रसाद जी को करना था, जो अपनी अस्वस्था के कारण पहुँच नहीं पाए | उन्होंने पर अपनी शुभकामना सन्देश और इस संगोष्ठी के लिए तैयार अपना महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित आलेख शीर्षक :-"शिक्षा, लोकभाषा और शिक्षा की गुणवत्ता : प्रो. हजारी प्रसाद दिवेदी " भिजवा दिया था ,जिसका वाचन प्रो. सिंह ने किया,उसी क्रम में उन्होंने अपनी बातें भी आगे बढाई |

प्रो. राजेन्द्र प्रसाद जी शिक्षा- दर्शन के साथ जीवन- दर्शन पर अपने आलेख में हजारी प्रसाद दिवेदी के मंतव्यों का विश्लेषण करते हुए इस बात को बार-बार रेखांकित करते हैं कि हमें शिक्षा- पद्धति की उन त्रुटियों को दूर करना होगा जो हम अध्यापकों को अपना दायित्व निभाने से रोकती हैं और उनके कर्तव्य-बोध को दुर्बल करती है | प्रो. मानेन्द्र प्रताप सिंह ने बीज-वक्तव्य पढ़ते हुए अपनी कुछ विशिष्ट टिप्पणियाँ भाषा, दर्शन और सिदान्त पर भी की, जो विचार गोष्ठी के केन्द्र में रहा | एक तरफ उन्होंने भाषा और दर्शन के अंतर्संबंधों की व्याख्या की तो दूसरी तरफ संस्कृति को भी अपने वक्तव्य का आधार बनाया |

प्रो. कैलाश पटनायक,प्राचार्य,भाषा भवन ने दर्शन की लोक में व्याप्ति को रेखांकित करते हुए अपने विचार रखे | वहीं उपाचार्य प्रो.सुशान्त दत्त गुप्त ने अपने अध्यक्षीय भाषण में पं. ह. प्र. दिवेदी के व्यक्तित्व के विविध रुपों की चर्चा करते हुए शान्तिनिकेतन के मूल स्तम्भों में से एक माना और भा. दा. अनु.परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया और यह उम्मीद भी जतायी कि भविष्य में भी इस तरह के आयोजन होते रहेंगे | उन्होंने संगोष्ठी की सफलता की शुभकामनाएँ भी दी |

उद्घाटन सत्र् में उपस्थित एवं संगोष्ठी में भाषा लेने आने वाले सभी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रो. हरिश्चन्द्र मिश्र ने जो इस संगोष्ठी के सभापति भी रहे, कहा कि इस संगोष्ठी की परिकल्पना स्व. प्रो. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी जी के साथ बनी थी | आज वे होते तो निश्चित ही और भी बहुत कुछ होता फिर भी उन्हें श्रदांजली देते हुए इतना कहना चाहूँगा कि मुझे उम्मीद है इस संगोष्ठी से दर्शन की आम जनों में जो दुरुहता बनी है वह दूर होगी, उसे उसकी यथार्थता में समझा जाएगा, साथ ही यहाँ उन बिन्दुओं पर भी विचार किया जाएगा ,जहाँ दर्शन और साहित्य कैसे एक दूसरे में अन्तर्भुक्त हो जाते है | दर्शन की इस यात्रा में ह. प्र. दिवेदी जी का साहित्य कहाँ और किस भूमिका में हमारे समक्ष है ? यह देखना इस संगोष्ठी का सबसे बड़ा उदेश्य हैं |

इस सत्र् का सफलतापूर्वक संचालन दर्शन विभाग, विश्वभारती शांतिनिकेतन की प्रो. रेखा ओझा ने किया | संगोष्ठी के प्रथम वैचारिक सत्र का संचालन हिन्दी विभाग के अध्यापक डॉ जगदीश भगत ने किया एवं अध्यक्ष पद पर आसीन रहे हिन्दी विभाग के ही वरिष्ठ प्रो. रामेश्वर प्रसाद मिश्र जी | इस सत्र के मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित जयपुर से पधारे डॉ. हेतु भारदाज ने भी अपनी बात बीज- वक्तव्य में आयी भाषा दर्शन संबधी चिन्ता से शुरु की और ह. प्र. दिवेदी के भाषा संबधी चिन्तन की विस्तार से चर्चा की | साथ ही बाणभट्ट की आत्मकथा के प्रेम दर्शन की बड़े विस्तार से चर्चा की | विशिष्ट वक्ता के रुप में प्रो. सूरज पालीवाल, महात्मा गाँधी अन्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, ने ह. प्र. दिवेदी की साहित्यिक यात्रा में दर्शन की भूमिका को रेखांकित किया | इस सत्र में वक्ता के रूप में प्रो. मृदुला शुक्ला, इंदिरा गाँधी कला संगीत महाविद्यालय, खैरागढ़ (छ. ग.) ने भी संक्षेप में ह. प्र. दिवेदी की साहित्यिक यात्रा की रुप रेखा रखी | इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन डॉ श्रुति कुमुद, अध्यापिका, हिन्दी विभाग ने की |

भोजनोपरांत् दितीय सत्र प्रारंभ हुआ | जिसकी अध्यक्षता की म. ग. का. विद्यापीठ से पधारे प्रो. विष्णुदत्त पांडे जी ने और इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थीं वाराणसी महाविद्यालय से पधारी डॉ सुधा पांडे जी, जिन्होने दर्शन के प्रारम्भिक स्वरूप को सामने रखा| इस सत्र में एक शोध पत्र का वाचन किया मिजोरम वि.वि. के शोध छात्र श्री रवि प्रकाश मिश्र ने जिन्होने अपने पत्र में "सूफी दर्शन और प्रेमाख्यानक काव्य" विषय पर विचार प्रस्तुत किया |

अध्यक्षीय भाषण में प्रो. पांडे जी ने दर्शन के गूढ़ पारिभाषिक शब्दावली को सहज सरल भाषा में समझने समझाने की बात पर जोर दिया और दर्शन की व्याख्या करते हुए दर्शन के सामाजिक उपयोगिता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया /इस सत्र का संचालन किया - डॉ.अर्जुन कुमार,अध्यापक,हिंदी भवन, ने तो धन्यवाद दिया- डॉ. जगदीश भगत ने /

लगातार विचार- विर्मश के दौर का सिलसिला जब थमा तो सांय को हिंदी विभाग के छात्रों ने ह. प्र.दिवेदी के प्रिय कवि कबीर के जीवन और दर्शन से अनुप्राणित भीष्म साहनी द्वारा रचित नाटक "कबीर खड़ा बाजार में" का अद्भूत मंचन किया / सभी बाह्य आगत विद्तंमण्डली बच्चों की अभिनय प्रतिभा की कायल हो गयी / उन्होंने बच्चों के साथ ही इस प्रकार के नाटक बार – बार देख पाने की इच्छा जाहिर की / बच्चों के इस उत्सावर्धन के लिए हिंदी विभाग ने विद्वानों का आभार माना और विश्वास दिलाया कि हम आगे भी ऐसी प्रस्तुति देते रहेंगे / नाटक का निर्देशन किया विभाग की ही शोध छात्रा सुश्री स्वाति वर्मा ने / समय पर विभागीय शिक्षकों से परामर्श लेकर नाटक को और सार्थक बना पाई , इस बात के लिए स्वाति ने सभी शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट किया /

रात्रि भोजन की व्यवस्था भी संगोष्ठी समिति की ओर से विभाग में ही थी / सभी छात्र – छात्राओं ने बड़े मनोयोग से अपने अतिथियों को भोजन कराया जिनकी सबने भूरी – भूरी प्रशंसा की / यह क्रम तीनों दिन चला/ छात्रों की इस आत्मीयता को विदानो ने कभी न भूलने वाला अनुभव बताया / इस पूरे आयोजन (भोजन- व्यवस्था) का कार्य भार विभाग के ही पूर्व छात्र और वर्तमान में रानीगंज टी. डी. बी. कॉलेज के अध्यापक डॉ गणेश रजक ने कुशलतापूर्वक वहन किया / सुबह के नाश्ते से लेकर रात के भोजन तक की व्यवस्था बड़ी देख – रेख जैसे गुरुतर कार्य को इतनी निष्ठा और लगन से करने के लिए उनके प्रति भा. दा. अनु. प्र. के साथ – साथ सगोष्ठी आयोजन समिति ने भी आभार व्यक्त किया / तो श्री गणेश जी ने अपने इस कार्य में मदद कर रहे सभी विभागीय छात्रों के प्रति धन्यवाद प्रकट किया / कुल मिलाकर एक 'टीम वर्क' देखी गयी जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है / संध्या के समय इन छात्रों ने जिस लगन के साथ विभाग को रंगोली – दीपक आदि से सजाया उससे तो संगोष्ठी की भव्यता को चार चाँद लगा ही / जिसने भी देखा सबने यही कहा कि इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है /

२५ /०९/२०१५ को भी संगोष्ठी के दो वैचारिक सत्र सम्पन्न हुए / पहले सत्र की अध्यक्षता भूतपूर्व प्रो. एवं बंग्ला साहित्य के मूर्धन्य विदवान प्रो.राम बहाल तिवारी ने की / मुख्य वक्ता के रूप में इस सत्र में उपस्थित रहें - अलीगढ़ वि. वि. के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र शर्मा , प्रो. मृदुला शुक्ल एवं दर्शन विभाग के प्रो. सिराजुल इस्लाम , प्रो. विष्णु दत्त पांडेय (मा. गा. का. वि.) इस सत्र में दो शोध पत्र भी पढ़े गए , डॉ अभिनव चटर्जी एवं सुश्री मधु मिश्र (शोध छात्रा)द्वारा /

प्रो. रमेशचन्द्र शर्मा जी ने 'कबीर वांडमय में तांत्रिक (आगमिक) दृष्टि' शीर्षक से प्रस्तुत अपने लेख में भारतीय धर्म साधनाओं और अध्यात्म साधनाओं के संदर्भ में ह. प्र. दिवेदी के कबीर संबंधी अध्ययन को विस्तार से प्रस्तुत किया / इसी क्रम में उन्होंने नाथपंथी संतो और वैष्णव भक्ति का कबीर पर प्रभाव को भी रेखांकित किया / प्रो. मृदुला शुक्ल (इं. गा. क. संगीत वि. वि. छ. ग.) अध्यक्ष, हिंदी विभाग ने जीवन दर्शन के परिपेक्ष्य में ह. प्र. दिवेदी की औपन्यासिक सृष्टि की विस्तार से चर्चा करते हुए साहित्य और समाज के अंतसंबधों की गुत्थियों को दर्शन के माध्यम से समझने समझाने पर बल दिया / इसके लिए एक आवश्यक उपादान के रूप में आ. ह. प्र. दिवेदी के पुरे उपन्यास का गंभीर अध्ययन को आवश्यक माना / प्रो. विष्णुदत्त पांडेय ने ह. प्र. दिवेदी के " मेरा कांचनार " शीर्षक निबंध के माध्यम के माध्यम पुरे भारतीय : सौंदर्य – बोध की बड़ी विस्तार से चर्चा की / तो प्रो. सिराजुल इस्लाम ने सूफी- दर्शन की विस्तृत चर्चा करके संगोष्ठी को वैश्विक पहचान दिलायी / दो शोध आलेख श्री अभिनव चटर्जी और डॉ मधु मिश्रा ने प्रस्तुत किए / श्री चटर्जी का शोध आलेख - भक्ति कालीन साहित्येतिहास और दर्शन पर था तो मधु मिश्रा ने जैन - दर्शन और हिंदी - साहित्य पर अपनी बात रखी /

अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो. रामबहल तिवारी ह. प्र. दिवेदी के शान्तिनिकेतन आगमन, उन पर रवीन्द्र - प्रभाव और फिर हिन्दी साहित्य और भारतीय दर्शन के सम्मिश्रण की घटना को महत्वपूर्ण माना एवं एक बड़ा दार्शनिक रचनाकार कहकर ह. प्र. दिवेदी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की /इस सत्र का सफल संचालन डॉ. श्रुति कुमुद जी ने किया /

भोजानोपरांत अपराहन के वेचारिक सत्र की अध्यक्षता की दर्शन विभाग की प्रो. एवं भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो. आशा मुखर्जी ने / इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे मिजोरम वि. वि. से पधारे प्रो. सुशील शर्मा एवं लखनऊ वि. वि. से पधारीं अध्यक्ष, दर्शन विभाग, प्रो. कंचन सक्सेना, तीन शोध पत्र का वाचन हुआ सुश्री लिपिका दास एवं जे. के. भारती तथा श्रीमती ममता दुबे द्वारा /

प्रो. सुशील शर्मा ने पूर्वोत्तर की साहित्य संस्कृति पर अपनी बात करते हुए ह. प्र. दिवेदी को याद किया तो प्रो. कंचन सक्सेना ने दर्शन के विविध स्तरों की चर्चा करते हुए मानव जीवन में दर्शन की भूमिका को स्पष्ट करने की चेष्टा की /

सुश्री लिपिका दास दवारा प्रस्तुत शोध - पत्र में मानवता के संदर्भ में ह. प्र. दिवेदी के उपन्यासों का गंभीर विश्लेषण था, वहीँ श्रीमती ममता दुबे ने आ. ह. प्र. दिवेदी के साहित्यिक वैशिष्टय को अपने पत्र में रेखांकित किया /

दो महत्वपूर्ण और गंभीर वैचारिक सत्र के उपरांत भव्य संस्कृतिक सन्ध्या का आयोजन किया गया था, जिसमे विश्वभारती विश्वविद्यालय के संगीत विभाग ने अपनी प्रस्तुति दी / एक तरफ रवीन्द्र – संगीत और रवीन्द्र- नृत्य ने लोगों का दिल जीत लिया वहीं दूसरी तरफ शास्त्रीय संगीत के साथ लोग इस कदर अपने को भूल गए मानों वे किसी और ही लोक में हो / श्रीलंका का कैंडी नृत्य भी एक प्रमुख आकर्षण रहा / मणिपुरी नृत्य और वाद्य – कला का प्रदर्शन देखकर श्रोतागण तो अभिभूत ही हो गए /

संगोष्ठी के तीसरे और अंतिम दिन के प्रथम वैचारिक सत्र की अध्यक्षता का भार संभाला भागलपुर वि.वि. के प्रो. एवं भूतपूर्व अध्यक्ष और प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक प्रो. श्रीभगवान सिंह जी ने / मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे प्रो. मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, प्रो. हरीशचंद्र मिश्र और शोध पत्र प्रस्तुत किया डॉ आलम शेख ने /

डॉ आलम शेख ने जहां ह.प्र. दिवेदी के निबंधो में स्थित मानवतावाद की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया / वहीं प्रो. हरीशचंद्र मिश्र जी ने अपने वकतव्य में मनुष्य, मनुष्यता, मूल्य, मानव और मानववाद की ह. प्र. दिवेदी के साहित्य में गहरी पड़ताल की / प्रो. मुक्तेश्वर नाथ तिवारी जी ने भी मनुष्यता के आलोक में ह. प्र. दिवेदी के रचना कर्म की गंभीर समीक्षा की जरूरत पर बल दिया / अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो. श्रीभगवान सिंह जी ने ह. प्र. दिवेदी के निबंधो में परिव्याप्त जीवन- दर्शन को समझने के लिए उनके विस्तृत रचना संसार के अवलोकन एवं मंथन को अपेक्षित बताया / उन्होनें ह. प्र. दिवेदी के जीवन- दर्शन में मानवतावाद की केन्द्रीय भूमिका को भी समझने पर जोर दिया जिसने उन्हें मानवतावादी चिन्तक और साहित्य समालोचक का दर्जा प्रदान किया है / इस सत्र का संचालन किया विभाग के ही अध्यापक डॉ सुभाषचन्द्र राय ने /

भोजनापरांत षष्ठ और अंतिम वैचारिक सत्र के रूप में आयोजित था , जिसका सफल संचालन डॉ जगमोहन सिंह (Post Doctrol Research Scholar)ने और अध्यक्षता प्रो. हरीशचंद्र मिश्र जी ने किया / इस सत्र की खासियत यही रही कि इसमें विभाग के वर्तमान शोध छात्रों से लेकर पूर्व के छात्र तथा आज विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों

में से जुड़ें सभी ने खुलकर भाग लिया, अपनी चिंता से अवगत कराया | कुछ प्रमुख नाम है – डॉ गणेश रजक (अध्यापक, रानीगंज टी.डी.बी. कॉलेज) डॉ अनिल सिंह (अध्यापक,जे.के.कालेज,पुरुलिया), डॉ जितेन्द्र नाथ मिश्र (बर्नपुर हाई स्कूल) डॉ श्रीकांत दिवेदी (अंशकालिक अध्यापक,सिक्किम विश्वविद्यालय) , डॉ सत्येन्द्र पाण्डेय (अध्यापक,बानर हाट हाई स्कूल) | रीमा गुप्ता , रानी सिंह आदि |

संगोष्ठी में कुछ महत्वपूर्ण प्रपत्र और पढ़े जाने जो पहले ही डाक द्वारा प्राप्त हो गए थे पर वे किसी कारण वश संगोष्ठी का हिस्सा न बन सके | जिनमें कुछ प्रमुख नाम है – इं.गा. संगीत महाविधालय से आये डॉ निकेता सिंह, और श्रीमति मेधाविनी तुरे का प्रपत्र जो ह. प्र. दिवेदी के निबंधो में जीवन दर्शन पर आधारित है | आ.न. दे. सनत.महा.वि. के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो.प्रभाकर मिश्र का निबन्ध "पुष्प श्लोक आ. ह. प्र. दिवेदी" जो आ. दिवेदी के व्यक्तित्व के अअनछुए प्रसंगों पर आधारित है | निश्चित ही यह निबन्ध पढ़े जाते तो संगोष्ठी और भी अधिक विस्तार पाती ,फिर भी ऐसे अनेक निबन्ध प्राप्त है जो अनपढ़े रह गए पर इन सभी को एक पुस्तकाकार देने की योजना की उद्घोषणा सभापति द्वारा की जा चुकी है जिसकी आवश्यकता भी है |

समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वभारती विश्वविद्यालय के सह. आचार्य प्रो. स्वप्न कुमार दत्ता ने की और मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे --- बौध्द दर्शन और पाली भाषा के प्रकांड पण्डित प्रो. सुनीति कुमार पाठक जी | उन्होंने विद्वता पूर्ण भाषण देकर ऐसे संगोष्ठी के लिए सबका आभार प्रकट किया और ऐसे आयोजन होते रहें इस पर जोर भी दिया | उन्होंने इस बात की ओर भी सबका ध्यान दिलाया की 'करुणा' ही वह भाव है जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है | ह. प्र. दिवेदी के साहित्य में यह करुणा महत्वपूर्ण है – जिसे वे परंपरा से प्राप्त करते है और रवीन्द्रनाथ के साथ मिलकर भारतीय शिक्षा- दर्शन की एक नयी रूप – रेखा की तलाश करते हैं | इसी क्रम में डॉ मानेन्द्र प्रताप सिंह अपनी बात रखते हुए कहते हैं कि - इसी तरह की शिक्षा-पद्धति , जीवन-दर्शन हमें आज की भागमभाग की जिन्दगी से निजात दिला सकती है | पूरे संगोष्ठी के दौरान उपस्थित रह कर वे न केवल आयोजकों का मार्गदर्शन करते रहे बल्कि उन्हें प्रेरित भी करते रहे | सबसे बड़ी बात यही रही कि उन्होंने आयोजकों को बधाई दी इतने बड़े और सफल आयोजन की और यह आश्वासन भी दिया कि भा.अनु. दा. परिषद हमेशा ऐसे आयोजन के लिए भविष्य में भी सहयोग करना चाहेगा | डॉ हेतु भारद्वाज जी ने ह.प्र. दिवेदी के शिक्षा - दर्शन संबधी विचार को आज के संदर्भ फिर से पढ़े समझे जाने पर जोर दिया | अध्यक्षता कर रहे प्रो. स्वप्न कुमार दत्ता का कहना था कि रवीन्द्र- दर्शन का मनुष्यता के विकास में अपना एक महत्वपूर्ण योगदान है | जिसका प्रतिफलन ह.प्र. दिवेदी के साहित्य में भी मिलता है | उन्होंने विश्वविधालय की ओर से संगोष्ठी में पधारे सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया जिसके कारण इतना बड़ा और महत्त्वपूर्ण आयोजन संभव हो सका | इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन किया डॉ रेखा ओझा ने |

संगोष्ठी का सबसे बड़ा आकर्षण रहा कवि सम्मलेन जिसकी की अध्यक्षता वरिष्ट कवि और साहित्यकार श्री अष्टभुजा शुक्ल जी ने | जो कविगण इसमें उपस्थित रहें वे हैं --- -

श्री नंदकिशोर नंद (मुज्जफरपुर)

श्री कुमार विरल (बब्बन पाण्डेय,मुज्जफरपुर)

श्री राकेश रंजन (मुज्जफरपुर)

श्री विमलेश त्रिपाठी (कोलकाता)

श्रीमति निर्मला टोडी (कोलकाता)

श्री कुमार विश्वबंधु (कोलकाता)

श्री निशांत (कोलकाता)

इस काव्य संध्या को देश के विभिन्न प्रान्तों से आए इन कवियों ने अपनी कविताओं से और भी ज्यादा लोकप्रिय बना दिया | शुरुआत हुई युवा कवि निशांत की कविता 'जवान होते लड़के का कबुलनामा' संग्रह की कविताओं के पाठ से | आज के दौर के विशिष्ट कवि श्री विमलेश त्रिपाठी ने अपनी विशिष्ट कविताएँ – अकेला आदमी , स्त्रियाँ, आजकल, माँ, कठिन समय में प्रेम जैसी कविताओं के माध्यम से समय और समाज की सुन्दर और यथार्थ की अभिव्यक्ति की | एक बानगी देखें इन पंक्तियों में – " प्यार और संबंध के बिसर गए अंतिम संशय / हमारी देह / खड़ी है एक चौराहे पर / प्रयाण को आतुर / गुजरे हुए क्षण की एक घायल चिड़िया / चुप बैठी है / अपने घरौदें से दूर / और अब हमें / अपनी-अपनी गहराइयों में लौटाना होगा /"

कोलकाता से पधारे दूसरे कवि डॉ कुमार विश्वबंधु ने आम आदमी की पीड़ा को कुछ इस तरह रखा – " दोड़ते हुए लोगों में / वे बीच में होते है / न वे सबसे आगे होते हैं , न सबसे पीछे / वे सिर्फ बीच में होते हैं /और दोस्तों !पृथ्वी गवाह है / इतिहास में बीच के लोगों का नाम नहीं होता /"

रंगकर्म से जुड़ी और स्त्री- चेतना की एक महत्वपूर्ण कवयित्री निर्मला टोडी ने अपने संग्रह "अच्छा लगता है" से कई कविताएँ सुनाई | एक बानगी देखें – लक्ष्मण रेखा लाँघ गई सीता / अपनी खिंची थी नहीं / अपनी गढ़ी देहली /पार करना उतना आसान नहीं |"

मुज्जफरपुर से पधारे दो विशिष्ट गीतकारों ने तो शमां ही बांध दिया | कविता के मंच की शान डॉ नंद किशोर नंद ने अपनी गजल कुछ यूँ कही ---- जितना ही जले और आग हुए हम /अंधियारी रातों की आँख हुए हम |"

तो कवि कुमार बिरल (डॉ बब्बन पांडेय) जी हिंदी गीत कुछ इस तरह छेड़ी---- – मिट्टी की गंध लिए / पुरवाई छंद लिए " सुनकर तो श्रोता वाह-वाह कर उठे और फिर जब उन्होंने एक भोजपुरी गीत "सोना से सुनर देहिया धरती दुलारी, सातों रंग घोरी केहु मारे पिचकारी |"की तान छेड़ी तो सुनकर ऐसा लगा मानों वे उनके बीच ही जाकर रच- बस गए |

हाजीपुर से पधारे विशिष्ट युवा कवि श्री राकेश रंजन ने समय की पीड़ा और अपने गाँव नगर को अपने ढग से अपनी--- गुरुबानी, गाय, बैल, घिर रही है शाम, तितली और कवि, महानगर में बकरी जैसी कविताओं के माध्यम से बखूबी उकेरा | एक उदाहरण – " दहशत और दरिंदगी से भरे / हमारे इस असमय में / हो सकता है /घर लौटते वक्त दिख जाएँ / फसल की तरह / काटे गए / किसानों, खेतिहार मजदूरों के शव / या दिख जायें / बागों की तरह उजाड़े गए / सैकड़ों घर / जंगल जैसे काटे गए अनगीनत लोग |"

कवि सम्मेलन के अध्यक्ष रहे पं. अष्टभुजा शुक्ल ने सभी कवियों की तारीफ करते हुए अपनी कुछ कविताएँ बड़े आग्रह करने पर सुनाई | जिनमें एक तरफ माँ थी तो दूसरी तरफ पिता पर सुनाई उनकी कविताओं ने लोगों को परिवारिक आत्मीयता से सराबोर कर दिया | उन्होंने आयोजकों को भी अपनी ओर से धन्यवाद दिया |

इस कवि सम्मेलन की सफलता इस बात पर ज्यादा रही कि काफी समय बीत जाने पर भी श्रोताओं का आग्रह इतना प्रबल था कि कविता के दौर चलते रहे / ऐसा लगता था मानों कविता से किसी का मन भरा ही नहीं / कवियों ने श्रोताओं के इस इच्छा को देखते हुए आश्वस्त किया हम फिर आयेंगे और आप जब तक आप सुनना चाहें हम सुनाएंगे /

इस प्रकार तीन दिनों का यह महोत्सव साहित्य और दर्शन को समझाने का एक आयोजन भव्य तरीके से संपन्न हुआ सभापति के धन्यवाद ज्ञापन के साथ और इस संकल्प के साथ कि भविष्य में पुनः सभी विद्वानों कवियों के साथ फिर जुटेंगे विमर्श के मैदान में /

प्रस्तुति – डॉ.जगदीश भगत